शिक्षकों का पेशेवराना अंदाज : वक्त की आवश्यकता

*डॉ. ओम प्रकाश मीणा
**डॉ. जितेन्द्र कुमार लोढ़ा
***डॉ. पुष्पा राठौड़

सार–संक्षेप

प्रस्तुत पत्र में 'शिक्षण–पेशे' के विकास संबंधी वर्तमान एवं यथार्थ संदर्भों को खंगालने का प्रयास किया गया है, जिसमें शिक्षकों के पेशेवर–विकास के मायने, पहलू, मार्ग व अनुभवजनित अवलोकन के निष्कर्षात्मक–विशेषण जैसे पक्ष सम्मिलित है। इन सभी पक्षों के विवेचन से यह सत्य प्रत्यक्ष है कि–शिक्षण–पेशा आज तक भी फ्रंटलोडेड एवं एक बारगी प्रमाणन के स्वरूप में प्रचलित है, जिसमें अधिकांश निवेश शिक्षकों के कैरियर के शुरू में ही कर दिया जाता है, बाद में तो वही एक ढ़र्रा, जो स्थैतिक है। शिक्षा व उससे संदर्भित उत्पाद, शिक्षकों की गुणवत्ता से परे कैसे हो सकते हैं ? इसलिए शिक्षा व शिक्षक–जगत में 'पेशेवर–चेतना' की अलख जगाना, वर्तमान के बदलावकारी व गत्यात्मक युग की महती आवश्यकता है, को केन्द्र में रखकर, शिक्षकों के पेशेवर–विकास की दशा व दिशाओं के पुष्ट व पुख्ता स्वरूप को समझने का यह एक प्रयास है, जो यह मानता है कि शिक्षकों के पेशेवर–विकास की धारणा, केवल एक घटना भर न होकर, बल्कि एक महत्वगामी प्रक्रम है, जो शिक्षकों के ज्ञान, कौशल, अभिवृत्ति एवं विकास के साथ–साथ उनकी प्रवृत्तियों व व्यवहारों को सामयिकता के पटल पर प्रबंधित करता है।

मुख्य रेखांकित शब्द–शिक्षक, शिक्षण पेशा, पेशेवरानाःविकास

विषयपरक पृष्ठभूमि

आज हमारे देश में पेशे एवं नौकरशाहों के लिहाज़ से 'शिक्षक–वर्ग' बड़े वर्गों या शायद सबसे बड़े वर्ग के रूप में शुमार है, लेकिन 'पेशेवर–विकास' के पायदान पर वह आज भी परम्परागत स्वरूप में व्यक्तिवादी व एक बारगी प्रमाणन के साथ–साथ एक ढ़र्रे के काम से जुड़ा हुआ है। सीधी सी बात है कि विकास एवं गतिशीलता के इस दौर में भी हमारे शिक्षकों में पेशेवराना अंदाज़ नहीं है। इसके मूल में कारण चाहे जो भी हो, लेकिन एक बात स्पष्ट है– हमारा शिक्षक, शिक्षण–नौकरी का मतलब प्राप्त मशीनी काम व तनख्वाह से समझता है तथा तरक्की का मतलब सिर्फ वेतन–वृद्धि व क्रमोन्नति से समझता है। जबकि उसके पेशेवर–विकास में उसकी उत्पादक–क्षमता, नीतिशास्त्रीय–समझ, सामाजिक–जागरूकता, सतत–सीखना, पहलकदमी, स्वायत्तता, नेतृत्व, सामाजिक– प्रतिबद्धता, जवाबदेही, समय परकता एवम् हितधारी–वर्गों (स्टेक होल्डर्स) की मांगों से अनुकूलन जैसे अनेक मुद्दे भी शामिल है, जो आज के शिक्षकों की पेशेवरना–छवी में कहीं भी परिलक्षित होते नहीं दिखाई दे रहे हैं। वहीं दूसरी ओर राष्ट्र की वर्तमान शैक्षिक–मांगों को देखते हैं तो हमें और भी अधिक शिक्षकों की आवश्यकता है, लिहाज़ा शिक्षकों की भर्ती, प्रशिक्षण, प्रोत्साहन एवं नौकरी में बनाए रखने की दृष्टि से उनके 'पेशेवर–विकास' का चिन्तन एवं क्रियान्वयन राष्ट्र को बहु आयामी लाभ देने वाला उपक्रम साबित होगा।

शिक्षक–पेशे के वर्तमान परिदृश्य को देखकर लगता है कि आज शिक्षण–पेशा फ्रंटलोडेड है, जिसमें अधिकांश निवेश शिक्षकों के कैरियर के शुरू में ही कर दिया जाता है, बाद में वही एक ढ़र्रा, जो स्थैतिक स्वरूप में

हैं।[1]शायद इसलिए डेलार्स–कमीशन(1996) की संस्तुतियों में कहा गया है कि ''वर्तमान समाज के गुणवत्तापूर्ण–विकास के लिए आवश्यक है कि अध्यापक अपने ज्ञान को परिपूर्ण और विकसित बनाएं। इसके लिए उन्हें सेवापूर्ण एवं सेवाकाल में अपने पेशे की पूर्णताओं को प्राप्त करने के सतत प्रयास करते रहना चाहिए।''[2]राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में भी इस बात को स्वीकारा गया है कि ''शिक्षकों की नियुक्ति, सेवापूर्ण–प्रशिक्षण, सेवारत–प्रशिक्षण तथा कार्य परिस्थितियों से संबंधित नीतियों में 1984 की चट्टोपाध्याय समिति के उन सुझाओं की झलक मिलनी चाहिए, जो पेशेवर दक्षता के सुधार के संबंध में दिये गये थे।''[3]

उपर्युक्त संस्तुतियाँ यर्थाथ भी है, क्योंकि भूमण्डलीकरण के इस वर्तमान युग में जीवन का लगभग हर क्षेत्र प्रतिस्पर्धा एवम् गत्यात्मकता से जुड़ गया है, तकनीकी–विकास के साथ–साथ संचार एवं सूचना–क्रान्ति के विकास ने शिक्षा व शिक्षण–पेशे की नयी मांगों को जन्म दिया है। विद्यार्थियों एवं अभिभावकों की परिवेशिक–विशेषताओं में परिवर्तन हुआ है, साथ में ज्ञान–निर्माण की धारणा एवं अपडेटिंग का प्रचलन बढ़ा है। इन सब तथ्यों के चलते विगत कुछ वर्षों से 'शिक्षकों के पेशेवर–विकास के दृष्टिकोण' की बातें होना लाज़मी है, यद्यपि शिक्षकों के पेशेवर–विकास का अर्थ क्या हो? इसकी दृष्टि फिलहाल अधूरी है, क्योंकि शिक्षण–पेशे को पूर्णतः चिकित्सा या वकालत जैसे शास्त्रीय पेशों की श्रेणी में नहीं गिना जा सकता। वह इसलिए कि शिक्षा समाज का विषय है, अतः शिक्षकों के पेशेवर–विकास की किसी भी योजना में, उसके भावात्मक व सामाजिक पक्षों को उपेक्षित नहीं किया जा सकता। इस वज़ह से आज आवश्यकता ऐसे पेशेवर–शिक्षकों की है, जो शिक्षा के सामाजिक–सरोकारों को समझते हुए, अपनी शिक्षण–शैलियों को, आज के विद्यार्थियों के अधिगम–शैलियों के अनुरूप न केवल बनाए रखे, बल्कि इस दिशा में अपनी सचेष्टता एवं विकासात्मकता की दृष्टि को अपने अक्षुण स्वरूप में पूर्ण एंव परिपक्व रखे।

शिक्षकों के पेशेवर–विकास की अवधारणा एक बहुआयामी दृष्टिकोण है, जिसमें शिक्षकों की सामाजिक प्रतिबद्धता के साथ–साथ उनके चयन, प्रशिक्षण, शैक्षणिक–विकास, क्षमता–निर्माण, निगरानी, आकलन एवं वैधानिकता जैसे अनेक मुद्दे शामिल है। ताजा तरीन शिक्षा अधिकार विधयेक–2009 के अध्याय चार की धारा 23 व 24 में भी शिक्षकों के पेशेवर–विकास (टी.पी.डी.) की दृष्टि से महत्वपूर्ण अपेक्षाएं रखी है, जिसमें सेवापूर्व तथा सेवाकालीन प्रशिक्षण की ही नहीं, बल्कि शिक्षकों के लिए सतत–शिक्षा, सहायता एवं एक ऐसे सामर्थ्यजनक माहौल की बात की गयी है, जो उन्हें हमेशा पेशेवर–विकास के लिए प्रोत्साहित व प्रेरित करे।[4]आज शिक्षकों के पेशेवर–विकास की दृष्टि से चुनौती यह समझने में है कि शिक्षकों के पेशेवर–विकास में क्या कुछ शामिल हो? और दूसरी तरफ यह भी सीसे की तरह साफ़ है कि आज सेवा के कुछ वर्षों बाद पदोन्नति की गारण्टी तो है, मगर पेशेवर–विकास के अन्य पहलू गौण है। शिक्षा–नीति (1986) एवं आर्थिक नीति (1991) के चलते भारतीय–शिक्षा में आज समता, क्षमता, दक्षता, गुणवत्ता, स्वायत्तता, सबकी भागीदारी, समावेशन, लोचपूर्णता, निजीकरण, वैधानिकीकरण, नवाचार, सूचना एवं संचार तकनीकी के साथ–साथ राष्ट्रीय शिक्षक मानक दक्षताओं जैसे मुद्दे प्रचलित है, अतः हम कह सकते हैं कि अन्य पेशों की भांति शिक्षक–पेशे की भी अपनी नैतिकता व मूल्य है, जिसके केन्द्र में उनकी क्षमता व प्रतिबद्धता निहित है। केल्डर हेड़ और डोन्नी ने शिक्षक–पेशे की धारणा में अर्जित ज्ञान, उपभोक्ता की सेवा व उसके साथ खास रिश्ता स्थापित करने की प्रवृत्ति, नीति, मूल्यों एवं दिशापरक न्याय के मुद्दों के ज्ञान के साथ राज्य और वाणिज्य के प्रभाव से उसके पेशेवर–निर्णयों की स्वतंत्रता जैसे मुद्दों को शामिल किया है।[5]राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (2009), (2014) ने सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं में परिवर्तन को स्वीकार कर, शिक्षकों के सतत व्यावसायिक–विकास के नेतृत्व एवं कार्यबल के महत्व पर जोर देते कहा कि पेशेवर–विकास, व्यवसायिक दक्षता के लिए जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। इस दिशा में क्रिस्टोफर डे (1999) का यह तर्क भी महत्वपूर्ण है कि ''शिक्षकों के व्यवसायिक–विकास को जीवन–पर्यंत चलने वाली गतिविधि के रूप में देखा जाना चाहिए, जो उनके निजी और साथ ही व्यावसायिक–जीवन पर कार्यस्थल की नीति और सामाजिक–संदर्भ पर ध्यान केन्द्रित

करती है।[6]

इन सभी संदर्भों एवं विवेचन की पृष्ठभूमि से एक ही तथ्य उभर कर आता है कि– गति व बदलाव के इस दौर में शिक्षकों में पेशेवराना–अंदाज़ का होना[9] आज की महती एवं अधिष्ठापन मांग है, जो एक ओर उनकी सतत–क्षमता एवं प्रतिबद्धता को केन्द्र में रख कर, दूसरी ओर संबंधित सामाजिक–संदर्भों एवं मूल्यों की प्रबल पक्षपाती बन जाती है, अतः शिक्षा व शिक्षक–जगत में पेशेवर–चेतना की अलख जगाना, एक समसामयिक उपक्रम है, जिससे शिक्षकों का न केवल अर्थ पक्ष मजबूत होगा, बल्कि उनके आत्म–सम्मान को भी हमेशा उच्च दिशा मिलती रहेगी।

पेशेवर–विकास के मायने

एक शिक्षक के पेशेवर–विकास में विषयवस्तु, कक्षा, स्कूल एवं समाज की जरूरतें होती है। यह सच्च है कि शिक्षण–पेशे में आने से पूर्व दीर्घकालीन अधिगम प्रक्रिया से गुज़र कर विशिष्ट ज्ञान, प्रशिक्षण और कार्यानुभव अर्जित किया जाता है,साथ में यह भी सत्य है कि आर्थिक–प्रतिफल के बदले में शिक्षण–पेशा वैयक्तिक एवं सामाजिक–दृष्टि से महत्वपूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। हमें यहां यह समझना होगा कि शिक्षण–पेशे में एक पेशे के सभी सामान्य लक्षण होते हुए भी उसे अन्य शास्त्रीय पेशों के समकक्ष नहीं रखा जा सकता, क्योंकि शिक्षण एक विशिष्ठ व अनूठा पेशा है, जिसकी कुछ निजी विशेषताएं है, जिसके चलते हम इसे पूर्ण पेशे की परिधि में नहीं रख सकते। यदि पेशेवर नज़रिये से देखा जाए तो आज भी शिक्षण–पेशे का कोई विकसित संघ नहीं है, जो शिक्षक बनने से पहले आज्ञा–पत्र (लाइसेन्स) जारी करे, न ही शिक्षण–पेशे की कोई लिखित आचरण–संहिता है। व्यवहार में शिक्षण एक वेतन–भोगी वृत्ति–समूह है, जो पूर्व निर्धारित पाठ्यक्रमों को कक्षाओं में पढ़ता है। अध्यापन व मूल्याकंन के अलावा इस दिशा के अन्य नियम उसे बने बनाए मिलते हैं। प्राय शिक्षण–वृत्ति में शिक्षक सामूहिक तौर पर अन्तःक्रिया करता है, अतः उसकी गुणवत्ता का आंकलन भी कठिन है, साथ में यह भी तय करना दुरूह कार्य है कि किसी शिक्षक का उसके विद्यार्थियों के समग्र विकास पर कितना व कितनी दूर तक प्रभाव पड़ा?

वर्तमान के प्रचलित शिक्षण–पेशे में, पेशेवर–विकास की प्रक्रिया के अन्तर्गत समग्र व सतत धारा का दृष्टिकोण न होकर, केवल और केवल एक बारगी लिए जाने वाले प्रशिक्षणों की संरचना–विहीन व असंगत–श्रृंखला दिखाई देती है। शिक्षण–वृत्ति के विकास के अधिकांश मार्ग यंत्रवत व संवाद–रहित है, इन सबके चलते शिक्षकों में पेशवर–विकास का पहलू कमज़ोर है, अतः इस कारण आज के बदलते परिवेश में शिक्षकों के पेशेवर–विकास में परिवर्तन की धारणा बलवत हो चली है। इस दिशा में लिबरमैन व मिलर (2009) का यह मॉडल अनुकरणीय है–

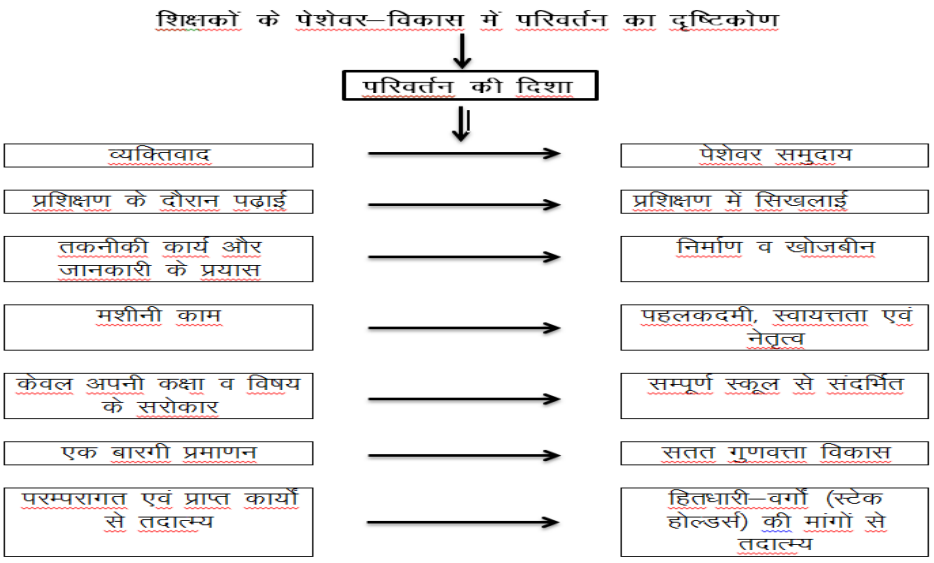

वर्तमान परिवेश को देख कर अब पुष्ट रूप से लगता है कि शिक्षण–पेशे में भी पेशवर–संस्कृति' का विकास हो, लिहाज़ा आज के शिक्षकों में स्वमूल्यांकन एवं आत्म–आलोचना का दृष्टिकोण विकसित करना आवश्यक है, ताकि उनमें अपने पेश के मानक व नीतिशास्त्रीय समझ पैदा हो सके, जिसके चलते हमारे शिक्षक–बन्धु, अपने आपको सिर्फ वेतन व क्रमोन्नति के नज़रिये से न देखकर, अपने को पेशेवराना–क्षमता एवं प्रतिबद्धताओं के नज़रिये से देख सके। आज शिक्षा में बाजारीकरण, होम–स्कूलिंग, लर्निंग ऑल दा टाइम जैसी अनेक समकक्ष अवधारणाएं शिक्षण को पूर्ण पेशा बनाने का प्रबल समर्थन कर रही है, तो वहीं दूसरी के ओर कॉमन–स्कूल सिस्टम, शिक्षा अधिकार, शिक्षा सबके लिए एवं राष्ट्रीय दक्षताओं जैसी अवधारणाएं,[9]शिक्षा के सामाजिक–सरोकारों पर बल देती है, अतः शिक्षण–वृत्ति का पेशेवर–दृष्टिकोण आज राष्ट्रीय व सामाजिक प्रतिबद्धताओं तथा वैयक्तिक आर्थिक लाभों एवं विकासों के मध्य संतुलन का हिमायती है।[7]

उपर्युक्त विवेचन के आलोक से यह नज़र आता है कि 'शिक्षण' अभी 'अर्द्ध–वृत्ति या 'प्रभासी–वृत्ति (Quasi-Protession) ही है, जो वर्तमान में भी पेशा–निर्माण की प्रक्रिया से गुज़र रही है, हो सकता है कि निकट भविष्य में शिक्षण–पेशा, विशुद्ध पेशा बन जाए, क्योंकि शिक्षा में वैश्वीकरण, निजीकरण एवं तकनीकीकरण की अवधारणाएं इसी ओर ही इशारा कर रही है, फिर भी पेशेवर–धारणा के इस प्रवाह में हमें शिक्षण के ज्ञानात्मक, भावात्मक, एवं क्रियात्मक पहलुओं को भी ध्यान में रखना होगा, क्योंकि अन्ततोगत्वा शिक्षण एक मिशन है, अतः शिक्षण को एक पेशे के रूप में विकसित करने के उत्साह में हमें उसके सामाजिक–प्रतिबद्धताओं वाले अनिवार्य पक्ष को विस्मृत नहीं होने देना है। आज भी शिक्षकों के कंधों पर अनेक सामाजिक–दायित्वों का भार है, वह इसकी अनदेखी भी नहीं कर सकते। वैसे भी अगर देखा जाए तो सही व सम्यक मायने में 'विद्यार्थियों का सर्वांगीण–विकास' ही शिक्षकों का प्रमुख पेशा है, इसलिए शिक्षकों के पेशेवर–विकास की कोई भी योजना विद्यार्थियों के संदर्भ से परे हो ही नहीं सकती, अतः विद्यार्थियों की संतुष्टि व विकास का स्तर ही, शिक्षकों के पेशेवर–विकास की सफलता का सबसे नज़दीकी व प्रत्यक्ष कसौटी है।[8]

पेशेवर–विकास के पहलू

जब एक शिक्षक अपने पेश के आवश्यक गुणों को वर्तमान व गत्यात्मक समाज की आवश्यकता के आधार पर विकसित एवं परिपूर्ण करे, साथ में अपने पेशे की अन्तर्आत्मा व समझ को, बहुआयामी स्वरूप में विकसित करे, तब जाकर कहीं वह वर्तमान समाज की मांगों के आधार पर, शिक्षण–प्रक्रिया में अच्छे ढ़ंग से समायोजित हो पायेगा। इस प्रकार की अनवरत प्रास्थितियों का, समग्र–शिक्षकों के संदर्भ में, व्याप्त हो जाने के दृष्टिकोण को हम पेशेवर–विकास की संज्ञा दे सकते हैं। इस संबंध में व्यस्क एवं सतत–शिक्षा के शब्दकोष (1996) में कहा गया है कि पेशेवर–व्यक्ति के संगठन में अच्छे प्रयोग के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल, प्रशिक्षण एवं अभिवृत्तियों को वर्तमान के आधार पर विकसित करना ही, उसका पेशेवर–विकास है। चिन्तन की इस धारा से स्पष्ट होता है कि शिक्षकों के पेशेवर–विकास के अनेक पहलू है, जिनको वरण किए बिना शिक्षकों का वृत्तिक–विकास सम्भव नहीं है, वैसे भी 'पहलू' का मतलब पक्ष से होता है, अर्थात इन पक्षों की पहल व समावेशन करके ही शिक्षकों में पेशेवर–विकास का शंखनाद कर सकते हैं, जिसकी बानगी अग्र चित्र से स्पष्ट है।

शिक्षकों के वृत्तिक–विकास विविध पक्ष

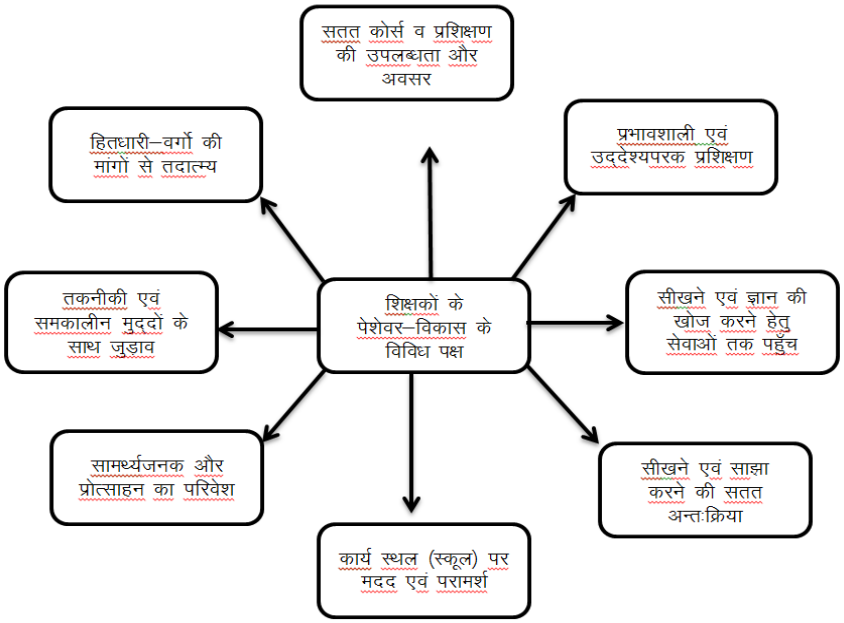

शिक्षकों के पेशेवर–विकास के इन पहलुओं के अवलोकन से स्पष्ट है कि पेशेवर–विकास की अवधारणा (टी. पी.डी.) में संगत–श्रृंखला, सरंचना, सम्बद्धता एवं सततधारा जैसे गुण आवश्यक व अपेक्षित है, अतः इस संदर्भ में शिक्षा–संस्थानों में सतत सीखने के अवसर, सामर्थ्यजनक एवं प्रोत्साही परिवेश, पेशेवर विकास के पथ, नेतृत्व के अवसर, स्वायत्तता एवं तंत्र–पारदर्शिता के साथ–साथ विधि सहसंबंधित पक्षकारों से अन्तःक्रिया के अवसर हर समय उपलब्ध रहने चाहिए, तब जाकर शिक्षक अपने पेशेवर–विकास के इंडिकेटर्स को न केवल समझ पायेंगे, बल्कि उन्हें अंगीकार कर, अपनी छवी को एक वृत्तिवान स्वरूप में तराश सकेंगे। पेशेवर–स्तर को मानकोनुकूल बनाए रखने के

लिए आज शिक्षक–समाज में एक 'पेशेवराना–संस्कृति' को सृजित करने की जरूरत है, इसके लिए पेशेवर–विकास के विविध पक्षों को व्यापक पैमाने पर प्रसारित कर, सतत व अक्षुण स्वरूप में पेशेवर–विकास का एक व्यापक व सुपरिभाषित कार्यक्रम विकसित करना चाहिए, तब जाकर कही हमारा शिक्षक–समुदाय अद्यतन व समकालीन हो पाएगा।

पेशेवर–विकास के मुख्य पथ

प्रत्येक पेशे में विकास के अनवरत पथ होते हैं, जिन पर संचलन कर पेशेवर–व्यक्ति अपनी व संगठनात्मक सफलता के आधारों का निर्माण करता है। शिक्षण–पेशा ही क्या? कोई भी पेशा, बिना सतत–शिक्षा, प्रशिक्षण एवं सीखने के अवसरों की उपलब्धता के स्थायी–सफलता अर्जित नहीं कर सकता, क्योंकि इन प्रक्रमों के अभाव में अनुभव–निर्माण की प्रक्रिया पूर्ण नहीं होगी, और बिना अनुभव के पेशा केवल मोम की गुड़िया के समान होता है। इसलिए आज की बुनियादी जरूरत यह है कि शिक्षकों के पेशेवर–विकास के लिए न केवल उनके स्वयं के आत्मनिर्देशित क्रिया–कलापों को प्रोत्साहित किया जाए, बल्कि उनके लिए अनवरत–शिक्षा और प्रशिक्षण के पथों को भी प्रबंधित व विकसित किया जाए। चूंकि शिक्षण–पेशे की सफलता का मानदण्ड उसकी गुणवत्तापरक–दक्षता है, इसलिए शिक्षक–विकास मार्गों के सुनिश्चितकरण के लिहाज़ से इस दिशा की वास्तविक प्रास्थितियों पर भी एक नज़र डालना आवश्यक है। श्री प्रकाश एवं सुमित्रा चौधरी (1994) के विश्लेषणात्मक अध्ययन''एक्सपेंडिचर ऑन एजुकेशनः थ्यौरी, माडल्स एण्ड ग्रोथ'' से पता चला कि शिक्षकों की उत्पादकता 30.91 है, जो औसत और सीमान्त–उत्पादकता से थोड़ी अधिक है, शिक्षक–उत्पादकता के इस निबल–निष्कर्ष को देखते हुए उन्होंने शिक्षकों के पेशेवर–विकास की प्रबल सिफारिश करते हुए कहा कि सम्पूर्ण गुणवत्तापरक दक्षता–निर्माण की दृष्टि से शिक्षकों के लिए सतत–विकास व सीखने के अवसरों को प्रबंधित किया जाए।[9]

वर्तमान परिवेश के अनुकूलन–स्तर कों प्राप्त करने के लिहाज़ से शिक्षण–पेशे में पूर्णता के पंख लगाने हेतु, हमें शिक्षकों के निर्धारित, आवश्यक एवं अखण्ड़ित–पथों को प्रबंधित करना होगा। शिक्षक सदैव आगे बढ़े, इसके लिए हमें उनकी विभिन्न प्रकार की तन्हाइयों को दूर कर, उनके लिए खुशनुमा व विकासगामी मार्गों को तलाशना होगा, तब ही जाकर आज का शिक्षक अपनी वृत्ति की दृष्टि से पूर्ण निष्ठावान व फलदायी–इकाई बन पायेगा। अपने पेशेवर–विकास के लिए शिक्षकों को अपने सांस्कृतिक, भौतिक, भाषायी, जैण्डर एवं तकनीकी–पक्षों की चिन्ताओं एवं हीन–भावनाओं से मुक्त होकर, लगातार सीखने की ओर प्रवृत्त होना होगा, साथ ही उन्हें अपने ज़मीनी स्तर के पूर्वाग्रहों व प्रतिष्ठा के मुद्दों से ऊपर उठकर, अपने व्यवसायिक–मर्मों को केन्द्र में रखकर, अपने निजी–विकास और आत्म–छवी को प्रबल बनाना होगा, तब जाकर कहीं शिक्षक–समुदाय में पेशेवर–संस्कृति का वांछित विकास हो पायेगा। इस दृष्टि से अग्रगामी चित्रानुसार वृत्तिक–विकास के राजमार्गो को दिशा देनी होगी, जो कि एक आवश्यक प्रक्रम है।

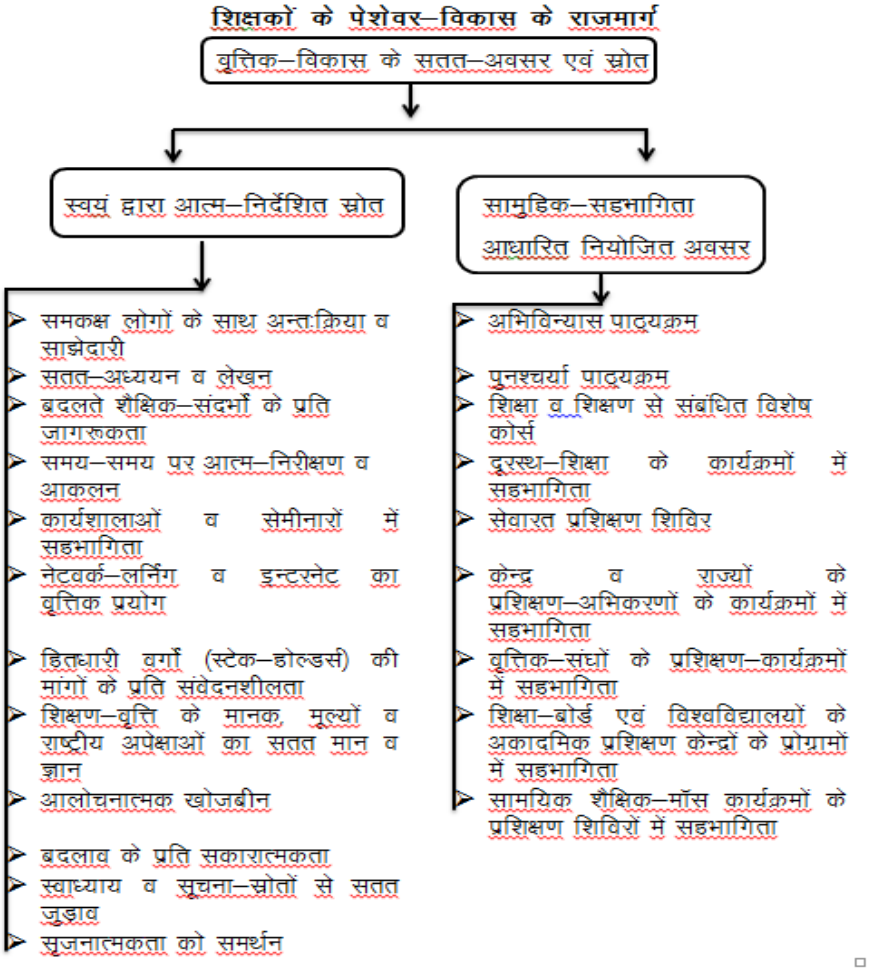

शिक्षकों में पेशेवराना–विकास के लिहाज़ से उपर्युक्त स्रोतों का आवश्यकतानुसार प्रयोग कर एक ऐसे परिवेश को जन्म देना, जिससे प्रत्येक शिक्षक में दक्षता, हुनर, ज्ञान एवं आत्मविश्वास का स्तर इस क़दर बढ़ जाए कि वह निष्क्रिय–ग्रहणकर्त्ता के स्थान पर सक्रिय–सहभागी बन जाए। इस निमित्त शिक्षण–संस्थानों में ऐसी गतिशील व्यवस्था प्रबंधित हो, जो विकास के विविध मार्गों के साथ,मूल्याकंन व पृष्ठपोषण की विभिन्न प्रक्रियाओं को एक सतत स्वरूप प्रदान करे। स्पष्ट है कि इस प्रकार की गतिविधियों के कारण शिक्षकों में पेशेवर–परिपक्वता के साथ सभ्यताकारी–दृष्टिकोण विकसित होंगे, इस तथ्य की पुष्टि एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली व अन्य संगठनों द्वारा

'भारतीय–शिक्षा की गुणवत्ता' पर करवाए गये अध्ययनों के निष्कर्षों से भी होती कि ''शिक्षकों के पेशेवर–विकास की दृष्टि से प्रबंधित सतत–शिक्षा व प्रशिक्षण स्तर, विद्यार्थियों के अधिगम स्तर को प्रभावित करते हैं, जो कि सकारात्मक साक्ष्यों के मान से प्रबंधित थे।''[10] सार मन्तव्य यह है कि शिक्षकों को अपने शिक्षकत्व को बनाए रखने के लिए, अपने पेशेवर–विकास के राजमार्गों पर सतत चहल–कदमी करनी होगी, तब जाकर उनका पेशा एक समाजोपयोगी उपागम बन पायेगा।

पेशेवर–विकास के प्रमुख अवलोकन

शिक्षकों के पेशेवर–विकास के समग्र कार्यक्रमों में ज्ञान–विज्ञान, सतत व सहज सीखना, पारदर्शिता, स्वायत्तता एवं जवाबदेही जैसे घटकों की शत–प्रतिशत उपस्थिति के साथ हमारे विद्यालयों में सदैव दिशापरक प्रभावी–प्रेरणाओं का साम्राज्य होना चाहिए, जिसके आलोक में शिक्षक–बन्धु स्वप्रेरित जिम्मेदारी का अहसास करते हुए, समाज को आवश्यकतापरक सेवार्थी सतत स्वरूप में प्रदान करते रहे, तब ही वह पेशेवर कहलायेंगे, अन्यथा उनकी उपस्थिति केवल स्थान घेरने वाले मिट्टी के लोथे के समान होगी। विचार–दर्शन की इस धारा से स्पष्ट है कि शिक्षकों के पेशेवर–विकास के कुछ निजी मुद्दे हैं, जिनको वरण किये बिना शिक्षकों का पेशेवर–विकास असम्भव तो नहीं, लेकिन कठिन अवश्य है। इस दिशा के कुछ अनुभवजनित मुद्दों का परिचय अग्र बिन्दुआनुसार है।

- पेशेवर–विकास कार्यक्रम के तहत शिक्षकों की वेशभूषा, हाव–भाव, वाणी की स्पष्टता, वाक्पटुता, विषयानुकूल प्रांजल–भाषा व शब्दों के प्रयोग के साथ–साथ सामान्य आदतें शिक्षण–पेशे की छवी के अनुकूल होनी चाहिए।
- शिक्षकों के पेशेवर–विकास के कार्यक्रमों में शिक्षकों की उपस्थिति व समयबद्धता का दृष्टिकोण पूर्ण परिपक्वता एवं वरियता लिए हुए होना चाहिए।
- पेशेवर–विकास की दृष्टि से शिक्षकों में अपनी वृत्ति के प्रति उत्साह, गर्व एवं प्रतिबद्धता का स्वरूप सदैव उच्च कोटी का रहना चाहिए।
- शिक्षक पेशे में अवकाश की बाहुल्यता रहती है, अतः अवकाश का प्रयोग पेशेवर–विकास की धारणा से किया जाए।
- शिक्षकों के पेशेवर–विकास के कार्यक्रमों में विद्यार्थियों के समग्र संदर्भों की समझअवश्य समावेशित करना चाहिए।
- विद्यालयों के परिवेश में पेशेवर–विकास के मार्ग एवं स्रोतों के प्रति जागरूकता व पहलपन के दृष्टिकोण को सतत स्वरूप में प्रबंधित करते रहना चाहिए।
- शिक्षण–वृत्ति विकास के निर्देशनीय–उपागमों को शैक्षिक–संस्थान के तंत्रागम स्वरूप में प्रभावी व पहल–दृष्टि से विकसित व प्रबंधित करना चाहिए।
- संस्थान में ऐसे सभी विमर्शों का सतत प्रसार एवं प्रबंधन करना चाहिए, जो शिक्षकों में सक्रियता एवं परस्पर सहयोग व निर्भरता का वातवरण पैदा करे।
- शैक्षिक संस्थानों में सूचना व सम्प्रेषण तकनीकी के साथ वृत्तिक–विकास के मार्ग व अनुभवों को साझा करने वाली प्रवृत्तियों को बढ़ावा मिले।

- यह देखना है कि शिक्षकों के पेशेवर–विकास के कार्यक्रम, शिक्षकों की राष्ट्रीय दक्षताओं से तदात्मय लिए हुए हैं या नहीं।
- यह देखना कि हमारे पेशेवर–विकास कार्यक्रमों से शिक्षकगण स्वयं को गौरवान्वित, जिम्मेदार एवं स्वायत्त स्वरूप में महसूस कर रहे हैं या नहीं।
- पेशेवर–शिक्षकों का संबंध सम्पूर्ण विद्यालय या तंत्र के साथ होना चाहिए, न कि एक कक्षा या एक विषय–विशेष के साथ।
- पेशेवर–शिक्षकों के लिए विद्यालयों की विविधता एक उत्सव होनी चाहिए, न कि भार।
- संस्थान के परिवेश में शिक्षण–पेशे की संस्कृति व नीतिशास्त्र की समझ व सम्मान का दृष्टिकोण हमेशा परिलक्षित होना चाहिए।
- शिक्षकगण, शिक्षा के बहुआयामी उत्पादकीय–कार्यों का महत्व समझे तथा अपने पेशे के समस्त कार्यो को शिक्षण का माध्यम बनाए।
- शिक्षण–वृत्ति के समस्त कार्यों की केन्द्रीय धुरी हितधारी–वर्गों (स्टेक–होल्डर्स) की आशा व आकांक्षा होनी चाहिए।
- शिक्षण–वृत्ति संघों का नज़रिया दलगत राजनीति से परे हट कर, शिक्षकों के वृत्तिक–विकास पर केन्द्रित होना चाहिए।
- शिक्षकगण, समाज व अपनी वृत्ति के प्रति सजगता दिखाते हुए, अपने दायित्वों को केन्द्र में रखकर बेहतर विश्व के लिए कार्य करे।
- शिक्षकों के पेशेवर–विकास कार्यक्रमों में नवाचार, अनुसंधान, परिवर्तनशीलता, कार्य–संस्कृति, टीम–वर्क एवं सामयिक–मांगों को उचित समर्थन व प्रबल स्थान मिलना चाहिए।

उपर्युक्त सभी अवलोकनीय बिन्दुओं की रोशनी से साफ झलकता है कि शिक्षकों का पेशेवर–विकास वर्तमान युग एक महती ज़रूरत है, इसके अभाव में हमें शिक्षक तो मिल जाएंगे, लेकिन उनका शिक्षकत्व हमसे हमेंशा मीलों दूर होगा।

निष्कर्ष

'शिक्षा', राष्ट्र के विकास में एक विशिष्ट उत्पादनीय–सेवा है, वह इसलिए कि शैक्षिक–उत्पादों की गुणवत्ता पर ही सम्पूर्ण राष्ट्र का उत्पादकीय ढ़ांचा व उसका स्वरूप निर्भर करता हैं। किसी भी उत्पादनकी गुणवत्ता का स्तर, उसके उत्पत्ति के साधन (इन–पुट्स) से परे हो ही नहींसकता, अतः स्पष्ट है कि शिक्षा व उससे संदर्भित उत्पाद, शिक्षकों की गुणवत्ता के फलन है, और शिक्षकों की गुणवत्ता उसके पेशेवर–विकास के नज़रिये पर निर्भर करती है।[11] इसके साथ–साथ आज शिक्षा में गुणवत्ता–सुनिश्चितकरण की मांग, बाज़ारीकरण, राष्ट्रीय–दक्षता, प्रतिस्पर्धा एवं भूमण्डलीकरण जैसे अनेक सरोकार, इस धारणा को और भी अधिक महत्वपूर्ण व प्रभावी बना रहे हैं, इसलिए शिक्षकों के पेशेवर–विकास की प्रक्रिया एक तरफ तो बाजारिक व सामयिक–दृष्टिकोण की कसौटियों पर आधारित होनी चाहिए, तो वहीं दूसरी ओर इसे राष्ट्रीय व सामाजिक–दायित्वों व अपेक्षाओं से अनुकूलित होना चाहिए, तब जाकर सही मायने में शिक्षकों के पेशेवर–विकास की धारणा का उदय हो पायेगा।

इस प्रकार शिक्षकों की वर्तमान स्थिति और भावी आवश्यकताओं को देखते हुए, यह स्वयं में सिद्ध है कि

शिक्षकों में पेशेवर–चेतना का होना, आज के द्रुतगामी, परिवर्तनशीलता एवं तकनीकी से परिपूर्ण–समाज की एक महती मांग है। इस संबंध में शिक्षा आयोग (1964–66), शिक्षकों पर आयोजित राष्ट्रीय आयोग (1983–85), राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986), राममूर्ति–समिति (1990), राष्ट्रीय ज्ञान आयोग (2005), राष्ट्रीय पाठ्यचर्या प्रारूप (2005), शिक्षा अधिकार विधेयक (2009) के साथ राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (एन.सी.टी.ई.)की लगभग सभी घोषणाओं आदि ने शिक्षकों के पेशेवर–विकास की दृष्टि से सेवापूर्व व सेवाकालीन सतत–शिक्षा एवं प्रशिक्षणों के सतत आयोजनाओं की सिफारिश के साथ शिक्षकों की समकालीन आवश्यकताओं के आधार पर रिफ्रेशर–कोर्सेज, प्रशिक्षण–संस्थान, मिलन–मंच, शिक्षावकाश, संगोष्ठियों, कार्यशालाओं एवं दिशापरक फॉलोअप गतिविधियों के प्रावधानों पर बल दिया है।[12]इन सारे संदर्भों व विवेचनाओं से यह तथ्य पुष्ट होता है कि शिक्षकों के पेशेवर–विकास की अवधारणा एक घटना भर न होकर, एक आवश्यकता आधारित प्रक्रम है, जो शिक्षकों के ज्ञान, विकास, कौशल, दृष्टिकोण, अभिवृत्ति व उनकी प्रवृत्तियों व व्यवहारों को सामयिकता के पटल पर प्रबंधित करता है.

***सह आचार्य**
आयुक्तालय,
कॉलेज शिक्षा राजस्थान
****व्याख्याता**
कॉलेज शिक्षा राजस्थान
*****सहायक आचार्य**
भूपाल नोबल्स स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय
उदयपुर (राज.)

संदर्भ ग्रन्थ

1. ''प्रारम्भिक शिक्षकों के सेवाकालीन–विकास के मुद्दों पर अन्राष्ट्रीय सेमीनार की रिपोर्ट–भुवनेश्वर (उड़ीसा)'', स्कूल व साक्षरता विभाग–एम.एच.आर.डी.नई दिल्ली, अक्टू 2010, पृ.सं. 7.
2. लोढ़ा जितेन्द्र, ''शैक्षिक–प्रशासन एवं गुणात्मक–शिक्षा की सफलता का मुख्य आधारः शिक्षकों का वृत्तिक–विकास'', नया शिक्षक, मा.शि. निदेशालय बीकानेर, दिस.2005, पृ.सं. 53.
3. ''राष्ट्रीय पाठ्यचर्या प्रारूप–2005'', एन.सी.ई.आर.टी.–नई दिल्ली, मई–2006, पृ.सं. 115.
4. ''आर.टी.ई.–2009'', राजस्थान बोर्ड शिक्षण पत्रिका, अजमेर, जून 2011, पृ.सं. 2.
5. सिंह ब्रिजेश, ''पेशवर शिक्षक के मायने क्या है,'' एजूकेशन मिरर, htt://educationmirror.org, 26 मई 2017 से उद्धरित।
6. ''सीखने–सिखाने की प्रक्रिया का परिवर्तनः शिक्षकों के व्यावसायिक विकास का नेतृत्व'',www.open.edu, 19 जन. 2018 से उद्धरित।
7. ''होम स्कूलिंगः एक बेहतर विकल्प'' एवं जॉन हाल्ट का शिक्षा–दर्शन'', परिप्रेक्ष्य, रा.शै.यो.प्रा. विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, अप्रेल–2007, पृष्ठ संख्या 83–90. एवं 133–140. (संदर्भित पैरा वर्णित दोनों आलेख के आलोक से तैयार किया गया है)

8. शिक्षण–पेशे के संबंध में संदर्भित निष्कर्ष डॉ. भानु शर्मा के आलेख ''शिक्षकों के वृत्तिक विकास'' से उद्धरित किया गया है, विद्यामेघ मासिक पत्रिका, मेरठ (उ.प्र.), अंक–56, वर्ष–7, अक्टू. 2001, पृ.सं. 5–8.

9. श्रीप्रकाश एवं चौधरी सुमित्रा, ''एक्सपेंडिचर ऑफ एजुकेशनः थ्योरी, माडल्स एण्ड ग्रोथ,'' नीपा नई दिल्ली, 1994, पृ.सं. 310.

10. गर्ग पी.पी., ''शिक्षा में आर्थिक विचारधारा, क्षमता, दक्षता और गुणवत्ता के प्रश्न'', परिप्रेक्ष्य, नीपा नई दिल्ली, वर्ष–2, अंक–1, अप्रेल 1995, पृ.सं. 61.

11. सिन्हा और लोढ़ा, ''शैक्षिक–उत्कर्ष के लिए गुणवत्ता में सुधार की लक्ष्यपरक प्रक्रिया'', परिप्रेक्ष्य, न्यूपा नई दिल्ली, वर्ष–16, अंक–1, अप्रेल 2009, पृ.सं. 27.

12. तिवारी, शंकर प्रसाद, ''भारत के शैक्षिक सुधारों हेतु गठित प्रमुख आयोग/समितियाँ'', प्रतियोगिता दर्पण, आगरा (उ.प्र.), जन. 2011, पृ.सं. 1081–1085.